इकाई 2 उत्पादक और पुनरुत्पादक कार्य

संरचना **रजनी आर. मेनन**

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 पारम्परिक विमर्श - महिलाएँ और कार्य

2.4 सामयिक विमर्श - नारीवादी अर्थशास्त्र

2.5 उत्पादक और पुनरुत्पादक कार्य

2.5.1 महिलाओं के उत्पादक कार्य

2.5.2 पुनरुत्पादक कार्य

2.6 संचय, भुगतान वाले कार्य और बिना भुगतान वाले देखभाल के कार्यः नारीवादी विमर्श

2.7 मापन और मूल्यांकन की आवश्यकताः उत्पादक और पुनरुत्पादक कार्य

2.8 मापन के अंतर्राष्ट्रीय मानक

2.8.1 बिना भुगतान वाले कार्यों के मूल्यांकन की पद्धति

2.8.2 आँकड़ों के स्रोत

2.8.3 सार्वजनिक निवेश के लिए समय के उपयोग से जुड़ी सांख्यिकी निहितार्थ

2.9 सारांश

2.10 इकाई के अंत में कुछ प्रश्न

2.11 सन्दर्भ

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

इकाई 1 में आपने पढ़ा कि 'कार्य' को कैसे परिभाषित और अवधारणाबद्ध किया जाता है भारत के भीतर और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आंकड़ों की विभिन्न पद्धतियों के द्वारा उसे किस तरह वर्गीकृत किया गया है। अब आप पढ़ेंगे कि महिलाओं के उत्पादक एवं पुनरुत्पादक, दोनों, कार्यों के अवमूल्यन में नारीवादी अर्थशास्त्रियों ने कैसे तर्क किया है। इस इकाई का प्रारंभ महिलाओं के कार्यों के संदर्भ में पारम्परिक और समकालीन चर्चाओं से परिचित कराने से होता है। इसके बाद का अनुभाग यह बताता है कि महिलाओं के उत्पादन कार्यों में क्या-क्या शामिल है और महिलाओं द्वारा किए गये पुनरुत्पादक कार्य कैसे बाज़ार की गतिविधियों एवं उत्पादन की प्रक्रिया में योगदान देते हैं।

इस इकाई के अगले अनुभाग में आप खासकर विकासशील अर्थव्यवस्था और तीसरी दुनिया के देशों में अधिकतर महिलाओं द्वारा अंजाम दिये जाने वाले वैतनिक या देखभाल के अवैतनिक कार्यों के संदर्भ में नारीवादी विमर्शों के बारे में पढ़ेंगे।

इस इकाई के अंत में आप उत्पादक एवं पुनरुत्पादक कार्यों की माप एवं मूल्यांकन के महत्व और ज़रूरत के बारे में पढ़ेंगे। इसके बाद आप महिलाओं के कार्यों को मापने की अंतर्राष्ट्रीय पद्धतियों के बारे में जानेंगे।

आगे बढ़ने से पहले, इस इकाई के अध्ययन के उद्देश्यों के बारे में जान लें।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप सक्षम होंगे :

- महिलाओं द्वारा किये जाने वाले कार्यों के महत्व का वर्णन करने में;
- महिलाओं द्वारा किये गये कार्यों के मूल्यांकन में नारीवादी परिप्रेक्ष्य को समझाने में; और
- राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के कार्यों एवं योगदानों का मूल्य निर्धारित करने की महत्वपूर्ण पद्धतियों की चर्चा करने में।

2.3 पारम्परिक विमर्श – महिला और कार्य

महिलाओं और कार्य से सम्बन्धित प्रारंभिक विमर्शों को अर्थशास्त्र और उसकी सैद्धांतिक पृष्ठभूमि की तह में जाकर देखा जा सकता है। पारम्परिक आर्थिक सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि परिवार एक बुनियादी आर्थिक इकाई है। प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र प्रतिनिधि है और उसके पास तर्कसंगत विकल्प हैं। कार्य के दो क्षेत्र हो सकते हैं – आर्थिक और घरेलू. आर्थिक क्षेत्र क्रेता, विक्रेता और बाज़ार पर केन्द्रित है, जबकि घरेलू क्षेत्र उन विविध अवैतनिक कार्यों पर टिका है जो आर्थिक क्षेत्र के संचालन के लिए आवश्यक हैं। बाज़ार में जिन वस्तुओं को बेचा जाता है, उन्हें सिर्फ उत्पादन के रूप में गिना जाता है और इसलिए घरेलू क्षेत्र आर्थिक क्षेत्र के दायरे से बाहर था। एक तार्किक (rational) व्यक्ति एक उत्पादक के तौर पर अधिकतम मुनाफा कमाता है और एक उपभोक्ता के तौर पर अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करता है।

आर्थिक क्षेत्र में, 'कार्य' वह है जिससे ऊर्जा की कोई भी गतिविधि, व्यय या जिससे अन्य लोगों के लिए सेवाओं और मूल्य देने वाले उत्पादों का उत्पादन होता है। हालाँकि 'कार्य' बिना किसी मज़दूरी, वेतन, या आय के संपन्न हो सकता है। आर्थिक संदर्भों में अगर बात करें, तो श्रम बाज़ार के कार्य सिर्फ मज़दूरी के लिए किये जाते हैं, जिसे उत्पादन शब्द के साथ फिर से जोड़ दिया जाता है। कोई कार्य, सिर्फ और सिर्फ, तभी उत्पादक है जब उससे मुनाफ़ा पैदा हो। इस तर्क से, अगर कोई पुरुष अपना भोजन तैयार करने वाली महिला से शादी करता है तो राष्ट्रीय आय में कमी आयेगी क्योंकि खाना बनाने के लिए पत्नी को वेतन नहीं दिया जाता।

पूंजीवादी व्यवस्था महिलाओं को महज सस्ते श्रम और एक सुविधाजनक स्रोत और **'श्रमिकों की एक आरक्षित फौज'** के तौर पर देखता है जिसे उत्पादन के किसी क्षेत्र विशेष में श्रमिकों की कमी होने पर प्रयोग में लाया जाये और ज़रूरत खत्म होने पर उसे फिर से त्याग दिया जाये (इसके बारे में आप पहले ही एमडब्ल्यूजी-002 खंड 2, इकाई 1 में पढ़ चुके हैं)। ऐसी स्थिति हमें दोनों विश्वयुद्ध के समय दिखाई दी, जब कारखानों में महिलाओं को सेना में बुला लिए गये पुरुषों की जगह लगाया और लड़ाई खत्म होते ही उन्हें वापस घर भेज दिया गया।

वर्ष 1950 एवं 1960 के दशक में पूंजीवादी उत्थान के दौरान महिलाओं को कार्यस्थल में एक बार फिर से प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। तब उनकी भूमिका सस्ते श्रम के एक भंडार के तौर पर प्रवासी मज़दूरों के समान थी। अपने पूरे इतिहास में, पूंजीवाद मांग के अनुरूप श्रम की आपूर्ति के प्रतिमान को बदलने में निपुण साबित हुआ है, और ऐसा खासकर महिला श्रम के संदर्भ में हुआ है। सभी समाजों, विशेषतौर पर विकासशील देशों में, आवश्यक लेकिन आमतौर पर खाना पकाने, सफाई एवं अन्य गृहकार्यों, बुनियादी घरेलू ज़रूरतों के प्रावधान, बच्चों की देखभाल, बीमार और बुजुर्गों की देखभाल जैसी अवैतनिक

गतिविधियों के साथ-साथ समुदाय आधारित गतिविधियां भी हैं। काफी हद तक इन्हें महिलाओं की ज़िम्मेदारी के तौर पर देखा जाता है। अवैतनिक कार्य का यह प्रतिमान तब भी कायम रहता है जब महिलाएँ आय के लिए दिहाड़ी मज़दूर या स्व-नियोजित मज़दूर के तौर पर बाहरी कार्यों में संलग्न रहती हैं। गरीब परिवार की महिलाएँ जो बाहरी कार्यों में भी संलग्न रहती हैं, आमतौर पर उपरोक्त दायित्वों को पूरा करने के लिए दूसरों को नियुक्त करने की हैसियत में नहीं होतीं, लिहाजा अक्सर ये दायित्व घर की छोटी बच्चियों एवं बुजुर्ग महिलाओं के द्वारा पूरे किए जाते हैं या फिर उन कामकाजी महिलाओं के कंधों पर काम का **'दोहरा बोझ'** होता है। ये प्रक्रियाएँ भी पूंजीवाद का अभिन्न हिस्सा हैं। महिलाओं द्वारा उपयोग लायक और विनिमय लायक, दोनों किस्म के, उत्पादों का उत्पादन संचय प्रक्रिया के लिए आवश्यक है, और हाल के वर्षों में यह निर्भरता थोड़ी और अधिक स्पष्ट हुई है (घोष, 2013)।

महिलाएँ पारम्परिक 'घरेलू निर्माता' (household producers) और पारम्परिक निर्वाह किसान (subsistance farmers) रही हैं, लेकिन उनके कार्य के लिए उन्हें कोई भुगतान नहीं किया जाता। अर्थशास्त्रियों के लिए किसी भी आर्थिक विश्लेषण से महिलाओं को बाहर रखना बेहद सरल था। यह दर्शाने के लिए बड़े पैमाने पर अनुसंधान किये गये हैं कि 'अनुत्पादक' और घरेलू कार्य किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में न सिर्फ योगदान देते हैं बल्कि वे उसका एक बहुत ही आवश्यक अंग भी होते हैं। इस बात का आंकलन किया गया है कि यदि अवैतनिक घरेलू कार्यों एवं निर्वाही कृषि व्यवस्था को किसी आर्थिक विश्लेषण में शामिल कर लिया जाये, तो वैश्विक उत्पादन की मात्रा में एक तिहाई की वृद्धि होगी (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम 1990, पृष्ठ 32)।

कार्रास्को (2001) के अनुसार, वस्तुओं और सेवाओं का घरेलू स्तर पर होने वाले या अवैतनिक कार्यों (मसलन, स्वैच्छिक कार्यों) के माध्यम से संभव होने वाले उत्पादन को अदृश्य बना दिया गया है और फलस्वरूप उत्पादन को बाज़ार के लिए उत्पादन मानकर और कार्य को रोज़गार के संदर्भ में रखकर उसे गैर-कार्य मान लिया गया है।

इस प्रकार, 'कार्य' की मूल परिभाषा सिर्फ श्रम बाज़ार की चारित्रिक विशेषता प्रदर्शित करने वाली गतिविधियों को शामिल तक ही सीमित है। **गोर्ज़** (1995) का कहना है कि कार्य की वर्तमान अवधारणा दरअसल औद्योगिक पूंजीवाद का एक आविष्कार है (सेलेब्रिटी और मीसा 2009 में उद्धृत)।

अब, हम महिलाएँ एवं कार्य से सम्बन्धित सामयिक विमर्शों पर एक दृष्टि डालेंगे :

2.4 सामयिक विमर्श – नारीवादी अर्थशास्त्र

महिलाओं के लिए पारम्परिक अर्थशास्त्र की धारणाओं के परिणाम विनाशकारी थे. **'अर्थव्यवस्था' के बारे में मुख्यधारा के विद्वानों के संकुचित एवं अपर्याप्त दृष्टिकोण के जवाब में नारीवादी अर्थशास्त्र का विकास हुआ।** असंतोष दो प्रमुख तत्वों से उपजा।

- एक तथ्य यह था कि मुख्यधारा का अर्थशास्त्र पारम्परिक रूप से अर्थव्यवस्था के मुद्रीकृत पहलुओं के विशेष अधिकार से लैस था, जबकि उसने **'सामाजिक पुनरुत्पादन'** (social reproduction) या 'अवैतनिक कार्यों' (unpaid work), जिसमें निर्वाह के लिए उत्पादन (जिसकी विशेषतौर पर विकासशील देशों में अहम भूमिका है) और सामाजिक ताने-बाने को एकजुट रखने वाला अवैतनिक देखभाल (परिवार, मित्रों और पड़ोसियों के लिए), दोनों शामिल थे, को नज़रअंदाज किये हुए था।

- असंतोष का दूसरा तत्व विषम लैंगिक अर्थशास्त्रियों (Heterodox economists), चाहे वे संरचनावादी हों या राजनीतिक अर्थव्यवस्था या फिर मानवीय विकास परिप्रेक्ष्य से जुड़े हों, द्वारा साझा किया गया। इसका सम्बन्ध, अमीर के साथ-साथ गरीब देशों के मामले में, वैधता और उपयोगिता से है। इसके अलावा, व्यक्तिगत व्यवहार के एक आदर्श के तौर पर इसका सम्बन्ध 'तर्कसंगत विकल्प' (rational choice) के नव-शास्त्रीय अवधारणा और व्यापक रूप से समष्टि अर्थशास्त्र और समाज से है।

अर्थशास्त्र के भीतर गैरी बेकर और उनके साथियों द्वारा विकसित की गयी एक सोच थी– **'नवीन गृह अर्थशास्त्र'** (न्यू होम इकोनॉमिक्स या एनएचई)। इस सोच ने सामाजिक जीवन के अवैतनिक/अदृश्य क्षेत्रों को अनदेखा तो नहीं किया, लेकिन फिर भी इसका विश्लेषण नव-शास्त्रीय विश्लेष्णात्मक उपकरणों के सहारे किया। जिसका परिणाम पारिवारिक रिश्तों से सम्बन्धित एक समस्याग्रस्त दृष्टिकोण के रूप में सामने आया, जो नायकत्व (परिवार के मुखिया की परोपकारिता) की धारणा पर आधारित था। इसने शक्ति सम्बन्धों और असमानताओं की (कल्याण के नतीजों और आय एवं संपत्ति तक पहुंच के संदर्भ में) अनदेखी की और गोलमोल तर्क गढ़े। जैसे, बाज़ार में कम आय पाने की वजह से महिलाएँ गृहकार्यों में दक्ष होती हैं एवं घरेलू जिम्मेदारियों की वजह से वे बाज़ार में कम आय पाती हैं आदि। एनएचई के संक्षिप्त संदर्भ में, मुख्य तर्क यह है कि नारीवादी अर्थशास्त्र सिर्फ इस तथ्य का आलोचक नहीं था कि नव-शास्त्रीय अर्थशास्त्र ने सामाजिक पुनरुत्पादन के अदृश्य और अवैतनिक क्षेत्र को नज़रअंदाज किया। यहां तक कि जब इसने इस दायरे की ओर अपना रुख किया तो इसके विश्लेषणात्मक उपकरणों ने एक आदर्शवादी बाज़ार क्षेत्र (जो पाठ्यपुस्तकों में पाया जाता है) और सामाजिक क्षेत्र के बीच के सभी मतभेदों को प्रभावी तरीके से मिटा दिया।

आप पिछले कुछ अनुभागों के बारे में अपनी समझ को परखें और प्रगति को जांचें :

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1) कार्य के दोहरे बोझ से क्या तात्पर्य है?

2) एक विचारधारा के तौर पर नारीवादी अर्थशास्त्र का उभार क्यों हुआ?

3) कार्य के दो क्षेत्रों के बीच अन्तर स्पष्ट करें?

अब हम उत्पादक और पुनरुत्पादक कार्यों को स्पष्ट करेंगे।

2.5 उत्पादक और पुनरुत्पादक कार्य

इस संदर्भ में, नारीवादी अर्थशास्त्र की एक अहम चुनौती तथाकथित अदृश्य या अवैतनिक अर्थव्यवस्था को दृश्यमान बनाने की थी। आइये, हम जानें कि उत्पादक और पुनरुत्पादक कार्य के रूप में चिन्हित ये दो गतिविधियां समाज में महिलाओं की स्थिति को कैसे प्रभावित करती हैं।

2.5.1 महिलाओं के उत्पादक कार्य

जेंडर और विकास से सम्बन्धित चर्चाओं के दायरे में अवैतनिक आर्थिक कार्यों को रेखांकित करने की प्रवृति का एक लंबा इतिहास है। यह सिलसिला विकास की परंपरा में महिलाओं (वीमेन इन डेवलपमेंट (WID)) परम्परा को लेकर और डेनिश अर्थशास्त्री **एस्टर बोसरप** के काम तक है। 'विकास की परंपरा में महिला' (WID) की अवधारणा के समर्थकों के विचार से, बोसरप की किताब (वीमेन्स रोल इन इकोनोमिक डेवलपमेंट, 1970) का महत्व इसलिए था क्योंकि इसने 'कल्याणकारी दृष्टिकोण' की अवधारणा को चुनौती दी और कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था में महिलाओं के महत्व को उजागर किया। अफ्रीका के उप - सहारा क्षेत्र को विशेष तौर पर 'नारीवादी खेती प्रणाली' के लिहाज से दुनिया के सबसे बेहतरीन क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया गया, जहां महिलाओं द्वारा उपयोग में लायी गयी पारम्परिक 'हो' (hoe) तकनीक ने खाद्यान्न उत्पादन की सारभूत जिम्मेदारी ली।

इसके अतिरिक्त, बोसरप ने कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका और पुरुषों की तुलना में उनकी स्थिति के बीच एक सकारात्मक सह-सम्बन्ध स्थापित किया है. 'विकास की परंपरा में महिला' की अवधारणा के समर्थकों द्वारा बोसरप के अनुसंधान को उत्साह के साथ किये जाने का एक मुख्य कारण यह था कि यह एक मां और पत्नी के रूप में महिलाओं की भूमिका से सम्बन्धित संकीर्ण दृष्टिकोण, जिसने महिलाओं के संदर्भ में पूर्व की विकास नीति के अधिकांश भाग को नज़रअंदाज किया, को खत्म करने में सहायक सिद्ध हुआ। सामान्य तौर पर WID को महिलाओं के उन कार्यक्रमों, जो स्वास्थ्य और समाज-कल्याण के नाम पर प्रयोग में लाये गये थे, से अलग करने का एक बड़ा प्रयास किया गया। महिलाओं को ज़रूरतमंद लाभार्थियों के रूप में चिन्हित करने के बजाय, WID के तर्कों ने महिलाओं को समाज के एक उत्पादक सदस्य के रूप में दर्शाया।

2.5.2 पुनरुत्पादक कार्य

वर्तमान नारीवादी आंदोलन के सबसे व्यापक विषयों में अहम है महिलाओं के कार्य के निर्धारक तत्व के रूप में पुनरुत्पादन की भूमिका पर ज़ोर, श्रम का लैंगिक (Sexual division) विभाजन, और स्त्री एवं पुरुष के बीच अधीनस्थ/वर्चस्ववादी सम्बन्ध।

पुनरुत्पादन और घरेलू क्षेत्र के विश्लेषण पर ज़ोर दिया जाना इस बात की ओर इंगित करता है कि पितृसत्तात्मक रिश्तों में महिलाओं के कार्य एवं उसके जड़ों को समझने के लिए पारम्परिक रूप से उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना पर्याप्त नहीं है। कार्यस्थल पर लैंगिक (जेंडर) भेदभाव, महिलाओं के वेतन, विकास की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी, और राजनीतिक कार्रवाई के परिणामों की प्रकृति को पूरी तरह से समझने के लिए विश्लेषकों को उत्पादन और पुनरुत्पादन के क्षेत्रों के साथ-साथ उनके बीच के अंतर्संबंधों की फिर से पड़ताल अवश्य करनी चाहिए। यहां श्रमशक्ति में जेंडर विभेद का एक उदाहरण आंतरिक श्रम बाज़ार प्रतिमान (मॉडल) है। यह प्रतिमान (मॉडल) श्रम बाज़ार में महिलाओं के दोयम दर्जे की नव-शास्त्रीय व्याख्या के एक अगले बिन्दु का प्रतिनिधित्व करता है। यह अन्य मॉडल द्वारा विकसित मांग और पूर्ति के कारकों के बजाय जेंडर विभेद और वेतन के अंतर की व्याख्या करने के लिए पूंजीवादी संस्थानों के आतंरिक संगठन पर ध्यान केन्द्रित करता है। इस आतंरिक संगठन की गतिकी (dynamics) रोज़गार के पायदानों और युग्मों (clusters), के निर्माण को बढ़ावा देती है, जो मज़दूरों के बीच पदानुक्रम या वर्गीकरणों को जन्म देते हैं। जेंडर एक कारक है, जिसके माध्यम से मज़दूरों को एक-दूसरे से अलग किया जा सकता है। इस प्रतिमान (मॉडल) में व्यावसायिक विभेद्, वेतन में अंतर और अन्य किस्म के लैगिक भेदभाव को उत्पादन की अनुक्रमिक एवं स्व-नियामक संरचना के परिणाम के तौर पर देखा जाता है।

इस प्रतिमान (मॉडल) के दो नीतिगत निहितार्थ निकाले जा सकते हैं :

- क्रांतिकारी नीति में मज़दूरों द्वारा नियंत्रित करने के कुछ तरीकों एवं वेतन की बराबरी के माध्यम से अनुक्रम पर आधारित उत्पादन की संरचना की समाप्ति शामिल होगी। यह एक हद तक मज़दूरों के बीच मतभेदों को समाप्त या कम करेगा। यह जेंडर के आधार पर मतभेदों को समाप्त या कम करेगा।
- एक अपेक्षाकृत कम क्रांतिकारी नीति में, समान अवसर और सकारात्मक कार्यनीति शामिल होगी, जो उत्पादन की संरचना और श्रम के पदानुक्रम को उसी रूप में अपनायेगी। लेकिन प्रत्येक रोज़गार को स्त्री-पुरुष की पहुंच के लिए समान रूप से आसान बनाया जायेगा।

इन दोनों नीतियों में एक बड़ी त्रुटि है। वे सिर्फ उत्पादन की संरचना पर केन्द्रित हैं और पुनरुत्पादन के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका पर गौर नहीं किया जाता। अगर महिलाओं को काम का दोहरा बोझ उठाना पड़ता है और उनके बच्चों की देखभाल के लिए पर्याप्त सुविधा उपलब्ध नहीं है, तो बहुत संभावना है कि इन दोनों में कोई भी नीति श्रम बाज़ार में महिलाओं की दोयम दर्जे की समस्या का समाधान न करे।

बॉक्स सं. 2.1

नारीवादियों का तर्क है कि घरेलू कार्यों को आवश्यक रूप से स्त्री एवं पुरुषों के बीच बाँटा जाना चाहिए, बच्चों के देखभाल की सुविधा विशेष तौर पर उपलब्ध करायी जानी चाहिए और बाज़ारवादी अर्थव्यवस्था में महिलाओं की वास्तविक क्षमताओं का पूर्ण सदुपयोग के लिए समाजीकरण की प्रक्रिया में पितृसत्तात्मक सम्बन्धों और जेंडर संकीर्णता आवश्यक तौर पर समाप्त की जानी चाहिए।

महिलाओं के कार्य को संकल्पनाबद्ध करना

मार्क्सवादी परम्परा के भीतर, रोचक तथ्य यह है कि एंगेल्स की संकल्पना में, पुनरुत्पादन एवं उत्पादन के बीच परस्पर व्यवहार का विश्लेषण मौजूद नहीं है। महिलाओं की अधीनस्थता की उत्पत्ति के बारे में उनके दृष्टिकोण का सम्बन्ध उत्पादन के साधनों के तौर पर निजी संपत्ति के समावेश से है और इसे पुनरुत्पादन के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करने की ज़रूरत है। अर्थात परिवार नाम की संस्था और महिलाओं की यौनिकता एवं उनकी पुनरुत्पादन सम्बन्धी गतिविधियों पर नियंत्रण के द्वारा उत्तराधिकारियों के पितृत्व के निर्धारण की ज़रूरत है। एंगेल्स की संकल्पना का प्रयोग एक औद्योगिकीकृत समाज में मौजूद परिस्थितियों, जहां आबादी के एक बड़े हिस्से का उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण तो नहीं होता लेकिन वहां संपत्तिविहीन लोगों के बीच श्रेणीक्रम और वर्ग का भेद मौजूद रहता है, के अनुरूप किया जा सकता है। खुद एंगेल्स ने भी अपने विश्लेषण को इस दिशा में आगे नहीं बढ़ाया। उनके और मार्क्स के विचार से निर्वाह के लिए उत्पादन और मानव मात्र का प्रजनन मानवीय गतिविधियों के दो बुनियादी स्तर हैं। हालाँकि एंगेल्स और मार्क्स, दोनों, का मानना था कि निजी संपत्ति का उन्मूलन और जिन्सों के उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी औद्योगिकीकरण द्वारा ही सुनिश्चित की जा सकती है और यही महिलाओं की उद्धार का पूर्व-निर्धारित समुच्चय बनेगा। इस प्रकार, एंगेल्स की संकल्पना में पाया जाना वाला उत्पादन और पुनरुत्पादन के बीच का शुरुआती सम्बन्ध इस धारणा के साथ धूमिल पड़ा कि उत्पादन की संरचना के रूपांतरण से महिलाओं का शोषण अपने आप ही मिट जायेगा।

पारम्परिक मार्क्सवादी विचारधारा और पारम्परिक वामपंथी एवं उदारवादी राजनीति ने इसी परंपरा का पालन किया। पुनरुत्पादन पर दिया जाने वाला ज़ोर दरअसल नारीवादियों द्वारा उठाये गये सवालों का परिणाम है। इसे एंगेल्स के शुरुआती सरलीकृत विचारों के विस्तार के तौर पर देखा जाना चाहिए। तीसरी दुनिया के देशों में महिलाओं से सम्बन्धित हाल के विविध अध्ययनों में महिलाओं के कार्यों के आंकलन के लिए उत्पादन और पुनरुत्पादन के पारस्परिक सम्बन्धों पर ज़ोर दिया गया है। आंध्रप्रदेश के नरसापुर में लेस (Lace) बनाने में संलग्न महिलाकर्मियों के बारे में मारिया मीएस द्वारा किये गये एक अध्ययन (1981) में यह दर्शाया गया है कि महिलाओं की तन्हाई या अकेलेपन (seclusion) ने कैसे उन्हें एक गैर-घरेलू उत्पादन कार्य में संलग्न किया। यूं तो लेस बनाने का काम अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार की ओर उन्मुख एक उद्योग है, लेकिन यह अकेलेपन और घरेलू कार्यों के बेहद अनुकूल है। घरेलू कार्यों के अलावा महिलाओं को लेस बनाने के काम में हर दिन सात से आठ घंटा लगना होता है। उनकी प्रतिदिन औसत आमदनी महिला खेतिहर मज़दूर के लिए आधिकारिक रूप से तय मज़दूरी की एक तिहाई से भी कम होती है। उल्लेखनीय औद्योगिक विकास के बावजूद ऐसी स्थिति वर्ष 1970 से जारी है और इस क्षेत्र में हस्तशिल्प के द्वारा होने वाली विदेशी मुद्रा आय के उच्च अनुपात की ओर इंगित करता है। कई महिलाओं के परिवार का खर्च तो उनकी ही कमाई से चलता है। इस अर्थ में वे ही अपनी परिवार की मूल रूप से आय अर्जित करने वाली सदस्य हैं। मीएस का तर्क है कि उच्च शोषण की यह व्यवस्था दरअसल स्थानीय समुदायों के भीतर एक बड़े वर्ग-विभेद और अत्याधिक ध्रुवीकरण की ओर ले जाती है। यह व्यवस्था पृथकता की उस विचारधारा की वजह से संभव हुई है, जो महिलाओं को उनके घरों तक सीमित कर देती है, बाहर जाकर काम करने के उनके अवसरों को समाप्त कर देती है और उन्हें बेहद कम मज़दूरी स्वीकार करने के लिए तैयार करती है।

2.6 संचयन, भुगतान वाले कार्य और बिना भुगतान वाले देखभाल के कार्य : नारीवादी विमर्श

नारीवादी अर्थशास्त्र के भीतर, बाज़ार आधारित पूँजी संचयन (पारंपरिक अर्थव्यवस्था) और गैर-बाज़ार आधारित सामाजिक पुनरुत्पादन (देखभाल की बिना भुगतान वाली अर्थव्यवस्था) के बीच सम्बन्ध स्थापित करने के बारे में कई महत्वपूर्ण बहसें हुईं हैं (रिज़वी, 2007)।

"राजकोषीय संयम" (fiscal restraint) और "उपभोक्ता शुल्क" (user fees) एवं अधिभारों के द्वारा जन कल्याणकारी सेवाओं के क्रमिक व्यावसायीकरण के संदर्भ में, यह तर्क दिया जाता है कि देखभाल प्रदान करने की लागत को मुद्रीकृत सार्वजनिक क्षेत्र से तेजी से हटाकर अवैतनिक देखभाल के क्षेत्र की ओर स्थानान्तरित कर दिया गया। उदहारण के लिए, स्वास्थ्य क्षेत्र के संगठनों में आये बदलाव को लिया जा सकता है। यह बदलाव मरीजों के अस्पताल में कम अवधि तक रुकने की वजह बन रही है और आवश्यक रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के खर्चों में कटौती का एक तरीका है। इसका मिलान घर पर लंबी अवधि तक आरोग्य लाभ और मरीजों की देखभाल पर अमुद्रीकृत संसाधनों के व्यय से किया जा रहा है।

इधर, संरचनात्मक समायोजन नीतियों ने भी 'व्यापार योग्य' सामानों, चाहे कृषि उत्पाद हो या फिर विनिर्मित, के उत्पादन को बढ़ावा दिया। इसने भी अक्सर महिला श्रम की मांग को मजबूती दी विशेष रूप से उस आर्थिक संकट के संदर्भ में, जिसने बड़ी संख्या में महिलाओं को वैतनिक (विशेष रूप से अनौपचारिक किस्म के) कार्यों की ओर धकेला। यह परिवार के अन्य सदस्यों की वास्तविक कमाई में आई गिरावट से निबटने का एक तरीका था। यह तर्क दिया जाता है कि महिलायें वैसी कामगार हैं जो वैतनिक और अवैतनिक कार्य के माध्यम से "समायोजन" की लागत का एक असंगत हिस्सा और बोझ अपने ऊपर पर लेती हैं जिससे उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

महिलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव के साथ विशेष रूप से आर्थिक संकट की अवधि के दौरान कमोडिटी अर्थव्यवस्था और अवैतनिक देखभाल अर्थव्यवस्था के बीच तनाव बना हुआ है। 1960 और 1970 के दशक में पूर्वी एशिया जैसे सफल विकास के सोपान में भी पूँजी संचय की प्रक्रिया, गैर-बाज़ार उत्पादन के स्तर के साथ एक संभावित व्यापार को कुंद (engenders) करती है। निर्यात को कृषि के माध्यम से और साथ ही निर्यात और सेवाओं की ओर निर्यात के विविधीकरण के माध्यम से विदेशी मुद्रा (आगे जा कर, सहायता निर्भरता से बचने के लिए) सृजत करने की आवश्यकता है। आमतौर पर कपड़ों और इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के निर्यात में वृद्धि करके, जो अक्सर 'सस्ते' महिला श्रम को नियोजित करके उत्पादित किए जाते हैं, वैसे देश तेजी से विकसित हुए हैं (उदाहरण के लिए, पूर्वी एशिया में), जहां विविधीकरण का प्रबंधन किया गया है। यहां मूल समस्या यह है कि एक स्थायी पूँजी संचय प्रक्रिया को कर राजस्व और विदेशी मुद्रा उत्पन्न करने के लिए विपणन (output) में वृद्धि की आवश्यकता होती है। लेकिन यह गैर-विपणन उत्पादन की कीमत पर भी हो सकता है। साथ ही नींद, आराम और श्रमिकों को स्वयं की देखभाल के लिए उनके कार्य दिवस में कटौती करने की आवश्यकता है।

आइए, अब चर्चा करते हैं कि उत्पादक और पुनरुत्पादन कार्य दोनों का मूल्यांकन करना क्यों महत्वपूर्ण है।

2.7 मापन और मूल्यांकन की आवश्यकताः उत्पादक और पुनरुत्पादक कार्य

हालाँकि पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाएँ पूंजीवाद के तहत सामाजिक सम्बन्धों में एक मूलभूत और स्थायी तत्व के रूप में "समय समायोजन को ध्यान में रखते हुए, उत्पादन और पुनरुत्पादन के लिए आवंटित समय को उत्पादक और पुनरुत्पादन कार्यों के बीच के सम्बन्धों के विश्लेषण में शामिल नहीं करती हैं। मार्क्सवादी विश्लेषणों में भी पुनरुत्पादन की जाँच उत्पादन प्रक्रिया के एक मूल रूप के रूप में की जाती है।"(अविला 2007, पृष्ठ 132) उत्पादक और पुनरुत्पादन के कार्य में जो समय खर्च होता है उसी आवंटित समय को ही उत्पादक कार्य के लिए मूल्यवान माना जाता है। **इसलिए गृहकार्य मज़दूरों के पुनरुत्पादन की प्रक्रिया में एक प्रमुख तत्व है जिसमें से अधिशेष मूल्य लिया जाता है।** चूंकि आमतौर पर गृहकार्य करने वाली महिलाएँ होती हैं, इसलिए यह देखा गया है कि यह श्रम शक्ति के पुनरुत्पादन का माध्यम है और उसकी वजह से महिलाओं को अधिशेष मूल्य के सांठगांठ में शामिल किया जाता है, जो पूंजीवाद की समझ में यह उनकी योग्यता में शामिल नहीं है। (रुबिन 1998, पृष्ठ 20)। नारीवादी आर्थिक सिद्धांत ने **'देखभाल अर्थव्यवस्था'** (care economy) की अवधारणा विकसित की जिसमें श्रमबल पुनरुत्पादन का कार्य करता है। इसमें गृहकार्य से जुड़ी सभी गतिविधियां शामिल हैं जैसे भोजन बनाना, सफाई का कार्य, घर, बच्चों बीमार और विकलांग लोगों की देखभाल।

देखभाल अर्थव्यवस्था या केयर इकोनॉमी की ज्यादातर गतिविधियां परिवार के दायरे में संचालित होती हैं। विशेषकर तीसरी अर्थव्यवस्था की दुनिया में जहां ज्यादातर घरेलू कार्य महिलाएँ ही करती हैं और इसके लिए उन्हें कोई भुगतान नहीं दिया जाता है। यह सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में मुहैया कराई जाने वाली पूरक सेवाएं होती हैं जिससे देखभाल की अर्थव्यवस्था सृजित होती है।(साल्वाडोर, 2007)।

देखभाल प्रदाता के रूप में राज्य द्वारा निभाई गई भूमिका का भार परिवार, स्वयंसेवक श्रम और / या बाज़ार की देखभाल भार निर्धारित करता है। यदि देखभाल की अर्थव्यवस्था और उसके वितरण को विनियमित करने के लिए कोई सार्वजनिक नीतियां नहीं हैं, तो इसका पूरा बोझ परिवार पर पड़ेगा, विशेषकर उन महिलाओं के मामले में, जिन्हें कार्य के संबंध में दोहरा या तिहरा पालियों में (double or triple work shifts) काम करना पड़ता है और इससे कम आय वाली महिलाओं के लिए सामाजिक उन्नति की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं। (साल्वाडोर, 2007)।

अपने प्रकाशन 'द इकोनॉमिज ऑफ हाउसहोल्ड प्रोडक्शन' में **मार्ग्रेट रीड** ने 'तीसरे व्यक्ति' की अवधारणा स्थापित की है जिसमें बाज़ार के लिए व्यवस्थित अर्थव्यवस्थाओं में अन्य गैर-आर्थिक गतिविधि से उत्पादक गतिविधि को अलग करने के लिए एक सुसंगत आधार प्रदान किया गया था। इसमें इस तथ्य का परीक्षण किया गया था कि क्या किसी गतिविधि का लाभ जिसे मिलना चाहिए उसे न मिलकर किसी दूसरे व्यक्ति को उसका लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार भोजन बनाना उत्पादक कार्य है लेकिन भोजन खाना उत्पादक कार्य नहीं है।

तार्किक रूप से होना यह चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति किसी कार्य को करता/कारती है तो उसे उसके लिए भुगतान भी किया जाना चाहिए। यानि की, यही उस वस्तु या सेवा के लिए एक संभावित बाज़ार है। उदाहरण के लिए, आपके लिए टीवी देखने के लिए किसी को भुगतान करने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि आपको इसका लाभ नहीं मिलेगा। हालाँकि, आपके लिए भोजन तैयार करने, या अधिक विवादास्पद रूप से, आपके साथ सेक्स करने के लिए किसी को भुगतान करना संभव है। इस प्रकार, ये सेवाएं कम से कम संभावित

रूप से विपणन योग्य हैं। इस 'तीसरे व्यक्ति' के मानदंड को अधिकांश अध्ययनों में मानक के रूप में अपनाया गया है जो ग़ैर-बाज़ार उत्पादन को महत्व देता है।

बॉक्स सं. 2.2

1947 में **साइमन कुजनेट्स**, जिन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रीय खातों को डिजाइन और कार्यान्वित करने में मदद की थी, ने ग़ैर-बाज़ार उत्पादन को शामिल करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली की आवश्यकता का तर्क दिया। 1950 और 1960 के दशक में कुछ देशों के राष्ट्रीय खातों में ग़ैर-उत्पादन को शामिल करने का प्रयास किया गया था, पर वास्तव में, ग़ैर-बाज़ार उत्पादन के महत्व पर 1970 के दशक में महिलाओं के आंदोलन की वजह से ध्यान केंद्रित किया गया।

1970 में एस्टर बोसेरुप के संस्थापक कार्य 'आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका, ने स्पष्ट रूप से तीसरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं में निर्वाह-उत्पादन (subsistence production) की मुख्य भूमिका और उन अर्थव्यवस्थाओं में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाया। बाज़ार आधारित खातों की अपर्याप्तता को बताते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान प्रणाली की निर्वाह गतिविधियों की अंडर-रिर्पोटिंग की नीति के कारण अविकसित देश वास्तव में ज़्यादा गरीब प्रतीत होते हैं और इससे उनकी आर्थिक वृद्धि (economic growth) वास्तव से बेहतर आंकी जाने की स्थिति में आ जाती है।

यह विकास की पश्चिमी धारणाओं के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती का प्रतिनिधित्व करने वाले 'तीसरे व्यक्ति' के मानदंडों की अवधारणा है और यह एक नारीवादी चुनौती भी थी, जिसे कि बोसेरुप ने बताया कि ये ऐसी महिलाएँ थीं जिन्होंने निर्वाह-उत्पादन (subsistance work) ही अधिकांश रूप से किया है। उन्होंने बताया कि इन महिलाओं की ये गतिविधियां निर्वाह-उत्पादन का हिस्सा हैं जिसे महिलाओं का गृहकार्य बताते हुए उत्पादन का कार्य मानने से इन्कार किया जाता था। बाद में नारीवादी आंदोलनों में इन तर्कों को अपनाया गया। 1970 के दशक की शुरुआत में एन ओकले के संस्थापक कार्य के बाद कई शोध श्रृंखलाओं ने स्पष्ट रूप से उत्पाद कार्य के रूप में उन गृहकार्यों की गिनती की जिसे मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता था। लगभग चालीस साल बाद, आज भी आंकड़े यही बताते हैं कि महिलाएँ पुरुषों के मुकाबले लगभग दोगुने अवैतनिक घरेलू काम करती हैं।

1975 तक, ओईसीडी (OECD) सांख्यिकीविद **डेरेक ब्लेड** जीडीपी में निर्वाह कृषि उत्पादन को शामिल करने के लिए 70 देशों के प्रयासों का सर्वेक्षण करने में सक्षम हुए। हालाँकि, यह देखते हुए कि महिलाओं की पारम्परिक घरेलू भूमिका के चलते घरेलू और निर्वाह गतिविधियों के बीच विभाजन अस्पष्ट है, उन्होंने निर्वाह-उत्पादन की तुलना में महिलाओं के घरेलू श्रम के मामले को 'काफी कमज़ोर' पाया।

1985 में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन से महिलाओं की सिफारिश के साथ विशेष रूप से विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों से राष्ट्रीय खातों की नारीवादी आलोचना की की गई है। अवैतनिक कार्य को मापने और महत्व देने के लिए इसकी 1995 में बीजिंग में पुनः पुष्टि की गई थी। लेकिन **यह मर्लिन वारिंग** ही थीं जिन्होंने अपनी ऐतिहासिक पुस्तक, **काउंटिंग फॉर नथिंग** (1988) के साथ एसएनए की नारीवादी आलोचना को लोकप्रिय बनाया। दुनिया भर के उदाहरणों का उपयोग करते हुए, वॉरिंग ने उस प्रणाली का उपहास उड़ाया जिसने महिलाओं को 'आर्थिक रूप से निष्क्रिय' के तौर पर वर्गीकृत किया, जिन्होंने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लंबे समय तक काम किया।

निम्नलिखित अभ्यास करके अपनी प्रगति की जाँच करें।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1) देखभाल अर्थव्यवस्था से क्या समझते हैं?

2) निम्नलिखित पर एक या दो पंक्ति लिखें:

क) एस्टर बोसेरुप

ख) मारिया मीज़ (Marie Mies)

ग) मार्गेट रीड

घ) साइमन कुजनेट्स

ङ) एन ओकले

च) मर्लिन वार्निंग

इस इकाई के अन्तिम भाग में आप पढ़ेंगे कि महिलाओं के उत्पादक और गैर-पुनरुत्पादक कार्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कैसे मापा जाता है।

2.8 मापन के अंतर्राष्ट्रीय मानक

सन् 1993 की संयुक्त राष्ट्र की राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एसएनए) एक संकल्पनात्मक ढाँचा उपलब्ध कराती है। यह ढाँचा आर्थिक गतिविधियों के मापन और वर्गीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय मानक स्थापित करता है। इस प्रणाली के अनुसार बिना भुगतान वाली कुछ गतिविधियों को 'आर्थिक कार्य' माना जाता है तथा भुगतान वाले कार्य की ही तरह इन्हें 'एसएनए उत्पादन परिधि' के अन्तर्गत रखा जाता है। बिना भुगतान वाले अन्य कार्य और गतिविधियों को 'गैर-आर्थिक' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

बिना भुगतान वाले आर्थिक कार्य

1993 का एसएनए अभिसमय इस तरफ इशारा करता है कि बिना भुगतान वाले आर्थिक कार्य को मापा जा सकता है और इसे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के वार्षिक प्राक्कलनों में सम्मिलित किया जा सकता है। बिना भुगतान वाले कार्य निम्न से सम्बन्धित हैं : (क) अचल सम्पत्तियों का घरेलू उपयोग के लिए किया जाने वाला उत्पादन, जैसे एक मकान का निर्माण करना; (ख) जीवन निर्वाह के लिए, स्वयं के उपयोग के लिए किया जाने वाला उत्पादन, जैसे फसलों की खेती करना, पशुपालन, वानिकी और मत्स्यपालन; (ग) बुनियादी आवश्यकताओं के लिए, सामान्य या निजी ज़मीनों से चीजों को एकत्रित करना, जैसे जल इकट्ठा करना या ईंधन के लिए लकड़ी एकत्रित करना; (घ) आय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों, जैसे हस्तशिल्प या अन्य विनिर्माण के लिए कच्चे माल को इकट्ठा करना; और (ङ) बाज़ार तक पहुँचने वाली फसलों का उत्पादन करना जैसे बिना भुगतान वाले घरेलू कार्य। जैसे पशुओं की चराई कराना तथा विक्रय के लिए कृषि प्रसंस्करण (एग्रो-प्रोसेसिंग) और खाद्य प्रसंस्करण (food processing)। इस प्रकार, बिना भुगतान वाले आर्थिक कार्य में वे गतिविधियाँ शामिल हैं जो उपार्जित निवेश वस्तुएं (इनपुट्स) स्वयं के उपयोग के लिए या बाज़ार के लिए उत्पादन से जुड़ी होती हैं। व्यवहार में, आँकड़े एकत्रित करने में विद्यमान अन्तराल, ऊपर वर्णित अनेक गतिविधियों के मापन को और राष्ट्रीय आय तथा उत्पाद लेखे में इन गतिविधियों को शामिल किए जाने को बहुत ही कठिन बना देते हैं। बिना भुगतान वाले कार्य के अन्य प्रकारों को एसएनए (1993) द्वारा 'गैर-आर्थिक' माना जाता है और उन्हें एसएनए की उत्पादन परिधि के बाहर ही रखा जाता है। बिना भुगतान वाले गैर-एसएनए कार्य को प्रायः ऐसे कार्य के रूप में सन्दर्भित किया जाता है जो 'एसएनए उत्पादन परिधि से बाहर' आते हैं। बिना भुगतान वाले इस गैर-एसएनए कार्य में शामिल हैं : घरेलू रखरखाव, साफ-सफाई, धुलाई करना, भोजन पकाना, खरीदारी करना, नवजात शिशुओं और बच्चों की (सक्रिय और निष्क्रिय रूप से) देखभाल करना, स्थायी या अस्थायी रूप से बीमार लोगों की देखभाल करना (इसके साथ-साथ अन्य सगे-सम्बन्धियों और निर्योग्य लोगों की देखभाल करना) तथा सामुदायिक सेवाओं के लिए किए जाने वाले स्वैच्छिक कार्य। ऐसे कार्यों के बारे में यह तो माना जाता है कि ये समाज में अपना योगदान देते हैं लेकिन यह नहीं माना जाता कि ये 'अर्थव्यवस्था' में भी अपना योगदान देते हैं। इसका संज्ञान लेते हुए एसएनए की सिफारिश यह है कि राष्ट्रीय आय और उत्पाद लेखे (जीडीपी) में समानान्तर (उपग्रहीय यानी आनुषंगिक) लेखों का निर्माण किया जाना चाहिए।

बिना भुगतान वाले कार्य के उपग्रहीय लेखे या विस्तारित एसएनए (ईएसएनए)

सन् 1993 में एसएनए ने औपचारिक रूप से इस बात का संज्ञान लिया कि गैर-एसएनए (ईएसएनए) गतिविधियाँ उत्पादक होती हैं और कल्याण में अपना योगदान देती हैं। इसलिए यह सिफारिश की गयी है कि इन गतिविधियों का एक उपग्रहीय लेखे में मापन किया जाए, जो मुख्य राष्ट्रीय लेखे से जुड़ा होता है। जहाँ भी सम्भव हो, इस उपग्रहीय लेखे में उसी तरीके की संकल्पनाओं का प्रयोग करना चाहिए, जो मुख्य राष्ट्रीय लेखे में प्रयुक्त होती हैं। दूसरे शब्दों में, यह लेखा राष्ट्रीय लेखे का एक विस्तार होगा ताकि घरेलू लेखे की प्रणाली में पुरुषों और महिलाओं की बिना भुगतान वाली घरेलू सेवाओं और स्वैच्छिक सेवाओं को शामिल किया जा सके।

आइए, अब उन तरीकों के बारे में पढ़ें, जिनके माध्यम से बिना भुगतान वाले कार्य को मापा जा सकता है।

2.8.1 बिना भुगतान वाले कार्यों के मूल्यांकन की पद्धति

बिना भुगतान वाले कार्य का मूल्यांकन या तो उसे कार्य में प्रदान किये गये श्रम के आधार पर (labour input) या फिर उस कार्य द्वारा अर्जित उत्पादन (work output) द्वारा किया जा सकता है।

इनपुट विधि : इनपुट विधि के अन्तर्गत, व्यक्तिगत स्तर पर बिना भुगतान वाले कार्य की गणना करने के लिए किसी व्यक्ति द्वारा बिना भुगतान वाले कार्य पर खर्च किए गए समय को एक उपयुक्त मज़दूरी दर से गुणा किया जाता है। सामूहिक स्तर पर, बिना भुगतान वाले कार्य पर खर्च किए गए कुल समय को उपयुक्त मज़दूरी दरों के एक समुच्चय से गुणा किया जाता है।

मज़दूरी दर का चयन करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। यहाँ दो प्रकार की मज़दूरी दरों का प्रयोग किया जा सकता है :

- स्थानापन्न मज़दूरी दर, यानी किसी व्यक्ति को दी जाने वाली मज़दूरी जो बाज़ार में बिल्कुल वैसी ही सेवाओं का उत्पादन करता है, अथवा
- अवसर लागत, यानी उस व्यक्ति द्वारा त्याग दी गयी मज़दूरी दर जो बिना भुगतान वाले कार्य का निष्पादन करता है।

बाज़ार स्थानापन्न मज़दूरी दर या तो एक सामान्य दर (उदाहरण के लिए, गृहस्वामी की मज़दूरी दर) हो सकती है या फिर विशेषज्ञ दर हो सकती है। सामान्य मज़दूरी दर किसी भुगतान पाने वाले घरेलू श्रमिक की दर हो सकती है, जोकि स्थानीय बाज़ार में प्रचलित हो। अलग-अलग गतिविधियों की विशेषज्ञ मज़दूरी दर प्रासंगिक घरेलू गतिविधियों के साथ तुलनीय होती है।

अवसर लागत यानी बिना भुगतान वाले कार्य में संलग्न व्यक्तियों द्वारा त्याग दी गयी मज़दूरी की गणना घरेलू श्रमिकों की उम्र, शिक्षा और योग्यता के आधार पर की जाती है। बिना भुगतान वाले कार्य का, अवसर लागत के आधार पर किया जाने वाला, मूल्यांकन व्यक्ति (शिक्षा, उम्र, योग्यता) को देखते हुए मूल्यों का निर्धारण करता है, न कि गतिविधि को देखते हुए।

आउटपुट विधि : आउटपुट विधि के अन्तर्गत, बिना भुगतान वाले कार्य के मूल्य की गणना करने के लिए आउटपुट की इकाइयों को, आउटपुट की प्रति इकाई मज़दूरी दर से गुणा किया जाता है। बिना भुगतान वाले कार्य का सीधे आउटपुट विधि से मूल्यांकन करने के लिए, बिना भुगतान वाले कार्य के आउटपुट से सम्बन्धित आँकड़ों की आवश्यकता होती है, जैसे – तैयार किए गए भोजनों की संख्या और मात्रा धुले गए और इस्त्री किए गए कपड़ों की संख्या, साफ किए गए घर का क्षेत्रफल, पढ़ाए गए बच्चों की संख्या आदि। इसके साथ ही आउटपुट की प्रति इकाई मज़दूरी दर के सम्बन्ध में भी आँकड़ों की आवश्यकता पड़ती है, जैसे – तैयार किए गए प्रत्येक भोजन के सम्बन्ध में श्रम का मूल्य, प्रत्येक कपड़े को धुलने और इस्त्री करने पर लगने वाला प्रभार, जिन बच्चों की देखभाल की गयी है, उनमें से प्रत्येक बच्चे की देखभाल पर लगने वाले श्रम का मूल्य आदि।

बॉक्स सं. 2.3

सैद्धान्तिक साहित्य में, बिना भुगतान वाले कार्य को मूल्य प्रदान करने अर्थात उनका मूल्यांकन करने के दो प्रमुख दृष्टिकोण हैं : (i) इनपुट सम्बन्धी विधि, जो बिना भुगतान वाले कार्य पर खर्च किए गए श्रम और समय को मूल्य प्रदान करने पर आधारित है,

तथा (ii) आउटपुट सम्बन्धी विधि, जो उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को बाज़ार मूल्य प्रदान करने पर आधारित है (उदाहरण के लिए, ईंधन के लिए एकत्रित की गयी लकड़ी को या घर में बनाए गए गृहस्थी के उपकरणों या बर्तनों को बाज़ार मूल्य प्रदान करना, आदि)। बिना भुगतान वाले कार्य के लेखे के परिप्रेक्ष्य से देखें तो इनपुट-सम्बन्धी लेखा आउटपुट-सम्बन्धी लेखे से बेहतर है। उदाहरण के लिए, यदि पानी लाने के लिए किसी महिला को काफी दूर तक जाना पड़ता है तो इनपुट-सम्बन्धी लेखा इस चीज को दर्शाएगा कि इसमें अधिक समय का इनपुट किया गया है, जबकि आउटपुट बिल्कुल भी अधिक नहीं दिखता। इस प्रकार, महिलाओं के कठोर प्रयास को इनपुट-सम्बन्धी लेखे में मूल्य प्रदान किया जाता है।

2.8.2 आँकड़ों के स्रोत

इनपुट-आउटपुट तालिकाओं को बनाने के लिए आवश्यक आँकड़े निम्नलिखित हो सकते हैं :

1) घरेलू समय के उपयोग से जुड़े सर्वेक्षण (श्रम के इनपुट और आउटपुट के लिए) – आउटपुट पर अतिरिक्त सूचनाओं के साथ,
2) घरेलू खर्च से जुड़े सर्वेक्षण – कच्चे माल, पूँजीगत वस्तुओं आदि पर किए गए घरेलू खर्च के लिए, तथा
3) प्रासंगिक कीमतों और मजदूरियों पर पूरक सूचनाएँ (उदाहरण के लिए – भोजन, बच्चों की देखभाल आदि की कीमत)।

एसएनए की इनपुट-आउटपुट तालिकाओं की ही तरह, घरेलू इनपुट-आउटपुट तालिकाएँ भी अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र की गतिविधि-संरचना को प्रस्तुत करती हैं तथा परिवारों द्वारा बिना भुगतान वाले श्रम और अपनी स्वयं की पूँजी के द्वारा की गयी प्रत्येक प्रकार की उत्पादक गतिविधि में मध्यवर्ती वस्तुओं, श्रम और पूँजी के उपयोगों को प्रस्तुत करती हैं।

बॉक्स सं. 2.4

घर-परिवार की बिना भुगतान वाली सेवाओं के लिए अनेक देशों ने उपग्रहीय लेखे (satellite accounts) नहीं प्रस्तुत किए हैं। शायद जर्मनी वह पहला देश था जिसने ऐसे लेखों को प्रस्तुत किया था। आस्ट्रेलिया, यूरोस्टेट और व्यक्तिगत रूप से कुछ यूरोस्टेट देशों ने और यूनाइटेड किंगडम आदि ने ऐसे लेखों को निर्मित किया है। इन लेखों ने यह दर्शाया है कि ईएसएनए का मूल्य जीडीपी के मूल्य के साथ तुलनीय है।

समय उपयोग सर्वेक्षण

समय उपयोग सर्वेक्षण (Time use survey) अनेक देशों में बिना भुगतान वाले कार्य की सांख्यिकीय अदृश्यता को अनावृत करने में एक प्रभावशाली उपकरण रहे हैं। समय उपयोग से सम्बन्धित आँकड़े समष्टि और व्यष्टि दोनों स्तरों पर सार्वजनिक नीति का निर्माण करने में सहायता करते हैं। समष्टि स्तर पर, समय उपयोग से सम्बन्धित आँकड़ों का प्रयोग आवर्धित आर्थिक और सामाजिक लेखा प्रणालियों के निर्माण में किया गया है (पारम्परिक आर्थिक लेखा प्रणालियाँ बाज़ार अर्थव्यवस्था में केवल उत्पादक गतिविधि को ही उपलब्ध कराती हैं तथा गैर-बाज़ारी समय और फुर्सत के उत्पादक उपयोग की उपेक्षा कर देती हैं)। व्यष्टि स्तर पर, समय उपयोग से सम्बन्धित आँकड़ों का प्रयोग करके घर-परिवार के भीतर के व्यावहारिक प्रारूपों का निर्माण किया गया है, जिनके निहितार्थ राजकोषीय नीति के

सन्दर्भ में महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, अध्ययनों ने बच्चों और वृद्धजनों की देखभाल में लगे गैर-बाज़ारी समय पर, घर-परिवार के भीतर के श्रम के विभाजन पर, खाली समय में की गयी गतिविधियों और समय के तनावों पर और उत्पादन गतिविधियों आदि पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

भारत में समय उपयोग से सम्बन्धित आँकड़ों को व्याख्यायित करना

किसी देश के श्रमबल के आकार पर और इसके साथ-साथ अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान पर बेहतर आँकड़े प्राप्त करने के लिए समय उपयोग सर्वेक्षणों (टीयूएस (TUS) – टाइम यूज़ सर्वेज़) को अधिकाधिक स्वीकार किया जा रहा है। छह राज्यों, नामतः गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, मेघालय, ओडिशा और तमिलनाडु में भारत के केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन द्वारा जुलाई 1998 से जून 1999 के दौरान जो सर्वप्रथम प्रमुख समष्टिगत टीयूएस सम्पन्न कराए गए थे, वह इस दिशा में न सिर्फ दक्षिण एशिया में, बल्कि विकासशील देशों में भी एक अग्रणी प्रयास था। भारत में 18,591 परिवारों पर किया गया यह व्यापक सर्वेक्षण इसको बेहतर तरीके से समझने में सहायता करता है कि अर्थव्यवस्था में जेंडर के हिसाब से समय का आवंटन किस प्रकार किया गया है। यह सर्वेक्षण भारत में महिलाओं द्वारा किए गए कार्य की सांख्यिकीय अदृश्यता को समझने के लिए अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। टीयूएस में परिवार के ऐसे सभी सदस्यों को आच्छादित किया गया था, जिनकी उम्र छह वर्ष या इससे अधिक थी।

भारत में टीयूएस ने गतिविधियों को तीन वर्गों में श्रेणीकृत किया था : एसएनए गतिविधियाँ (जिन्हें जीडीपी की गणना में शामिल किया जाता है), विस्तारित एसएनए गतिविधियाँ (जिन्हें जीडीपी की गणना में शामिल नहीं किया जाता है, लेकिन जिन्हें उपग्रहीय लेखे में शामिल किया जाना चाहिए) और अवशिष्ट गैर-एसएनए गतिविधियाँ।

निम्नलिखित अनुभाग में आप इस विषय में पढ़ेंगे कि समय उपयोग सम्बन्धी आँकड़े किस प्रकार नीति के सूत्रबद्धीकरण को प्रभावित कर सकते हैं।

2.8.3 सार्वजनिक निवेश के लिए समय के उपयोग से जुड़ी सांख्यिकी के निहितार्थ

आधारभूत संरचना के सन्दर्भ में राजकोषीय नीति के हस्तक्षेप हमें उस दिशा में ले जा सकते हैं जहाँ देखभाल अर्थव्यवस्था से बाज़ार अर्थव्यवस्था में महिलाओं के समय आवंटन में प्रतिस्थापन प्रभाव दिखते हों। परिवार में निर्धनता को कम करने तथा परिवार की शिक्षा-दीक्षा और स्वास्थ्य की प्रस्थिति को ऊपर उठाने में इसके महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। इसलिए, समय के उपयोग से जुड़ी सांख्यिकी के विश्लेषण से बेहतर राजकोषीय नीतियों को सूत्रबद्ध करने में आधारभूत आवश्यकताओं के पदों में सहायता मिल सकती है। अलग-अलग क्षेत्रों के लिए यह अलग-अलग होती है और पुनः इसके कारण समय के उपयोग से जुड़ी सांख्यिकी से कुछ नई चीजें प्रकाश में आ सकती हैं। बेहतर जेंडर संवेदी मानव विकास के लिए परिपूरक राजकोषीय सेवाओं को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है क्योंकि जेंडर सम्बन्धी मुद्दे अनेक क्षेत्रों के आर-पार व्याप्त होते हैं; उदाहरण के लिए, जल-आपूर्ति की आधारभूत संरचना में निवेश करना बालिकाओं के नामांकन के सुधार की एक पूर्व शर्त हो सकती है, जिसे समय के उपयोग से जुड़ी सांख्यिकी प्रकट कर सकती है।

सार्वजनिक आधारभूत संरचना और समय के आवंटन के बीच सम्बन्ध

प्रायः यह तर्क दिया जाता है कि सार्वजनिक आधारभूत संरचना जैसा मुख्यधारा का खर्च अपनी प्रकृति में किसी से प्रतिद्वन्द्विता नहीं रखता और इन चीजों को 'जेंडर लैस' देखना

संभव नहीं है। समय के बजट (Time budget) की सांख्यिकी द्वारा इस तर्क का खण्डन किया गया है। समय के बजट से जुड़े आँकड़ों ने स्पष्ट किया है कि ऐसे तर्क प्रायः झूठे ही हैं क्योंकि गैर-प्रतिद्वन्द्वी खर्च के भी आभ्यन्तरिक रूप से जेंडर आयाम मौजूद होते हैं। उदाहरण के लिए, जल या ईंधन एकत्रित करने जैसी आर्थिक गतिविधियों में लड़कियाँ और महिलाएँ ही अधिक संलग्न होती हैं तथा जेंडर संवेदी जल नीतियों और ऊर्जा नीतियों के साथ आधारभूत संरचना में निवेश करके महिलाओं को सचमुच लाभ पहुँचाया जा सकता है।

प्रथम दृष्टया, आधारभूत संरचना में सार्वजनिक निवेश में वृद्धि महिलाओं के ऊपर पड़ने वाले समय के भार (पानी या जल एकत्रित करने के लिए दूर जाने में खर्च होने वाले समय) से नकारात्मक रूप से सम्बन्धित है। सरकार यदि आधारभूत संरचना में निवेश में वृद्धि करे तो महिलाओं द्वारा किए जाने वाले बिना भुगतान वाले कार्य और बाज़ार के लिए किए गए कार्य के बीच प्रतिस्थापनीयता की सम्भावनाएँ मौजूद हो सकती हैं। आधारभूत संरचना में हानि और ग्रामीण निर्धनता के बीच एक सम्बन्ध हो सकता है। निर्धनता निवारण के लिए बनायी गयी राजकोषीय नीतियों के पदों में कहा जाए, तो 'समय की निर्धनता' (time poverty) अक्सर बढ़-चढ़कर सामने आती है। समय की निर्धनता, 'आय की निर्धनता' (income poverty) को प्रभावित करती है। आय की निर्धनता का निवारण करने के लिए बनायी गयी राजकोषीय नीतियाँ अगर समय की निर्धनता के पहलुओं पर विचार नहीं करती हैं, तो ये पक्षपातपूर्ण हो सकती हैं। नीति पर की जा रही इस चर्चा के जेंडर आयाम हो सकते हैं क्योंकि महिलाओं के पास समय का बहुत अभाव होता है तथा निर्धनता उन्मूलन के लिए बनायी जाने वाली राजकोषीय नीतियों के लिए यह आवश्यक है कि वे जेंडर के पार जाकर समय को आवंटित किए जाने वाले पहलुओं को अपने भीतर समाहित करें।

महिलाओं की एसएनए गतिविधि में समय के आवंटन के बारे में यह पाया गया है कि यह आवंटन सार्वजनिक आधारभूत संरचना के व्युत्क्रमानुपाती होता है। यह परिणाम इस तरफ संकेत करता है कि अगर आधारभूत संरचना को बेहतर बना दिया जाए तो महिलाओं के बिना भुगतान वाले एसएनए कार्य को कम किया जा सकता है। लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है कि बेहतर आधारभूत संरचना के जरिये पानी एकत्रित करने के बिना भुगतान वाले एसएनए कार्य में लगाए गए समय को अगर मुक्त कर दिया जाए तो बाज़ार कार्य की तरफ इसका प्रभाव प्रतिस्थापन वाला ही होगा। इसको आधारभूत संरचना और गैर-एसएनए गतिविधि में किए गए समय के आवंटन के बीच के सकारात्मक सम्बन्ध से और भी अधिक बल मिलता है। यह उल्लेखनीय है कि रोज़गार के सम्बन्ध में अवसरों की कमी के कारण महिलाओं के लिए गैर-एसएनए कार्य में किए गए समय के आवंटन में बढ़ोत्तरी एक बाध्य किस्म का खालीपन है। इस विश्लेषण से जो नीतिगत सुझाव उभरता है, वह यह है कि आधारभूत संरचना में किया गया निवेश बिना भुगतान वाली एसएनए गतिविधि में महिलाओं पर पड़ने वाले समय के दबाव को कम करता है; लेकिन आधारभूत संरचना में किए गए निवेश के साथ-साथ परिपूरक रोज़गार गारण्टी नीतियाँ भी आवश्यक हैं ताकि बिना भुगतान वाले कार्य को बाज़ार कार्य से प्रतिस्थापित करने वाले प्रभाव को सुनिश्चित किया जा सके और इसका परिणाम यह होगा कि इससे घर की गरीबी पर भी प्रभाव पड़ सकता है।

बॉक्स सं. 2.5

समय की निर्धनता आय की निर्धनता को प्रभावित करती है, लेकिन परिवार की क्षमता-वंचना के निवारण के लिए रोज़गार नीतियों के साथ आधारभूत संरचना आवश्यक है। किन्तु, आधारभूत संरचना में पर्याप्त सार्वजनिक निवेश के बिना रोज़गार गारंटी नीतियाँ भी समान रूप से व्यर्थ साबित हो सकती हैं क्योंकि महिलाएँ समय के मामले में निर्धन

होती हैं और बिना भुगतान वाली गतिविधियों में उनका जो समय खर्च होता है, उस समय को मुक्त करने के लिए बेहतर आधारभूत संरचनाएँ व सुविधाएँ आवश्यक होती हैं। ऐसा करके ही महिलाओं का संक्रमण बाज़ार अर्थव्यवस्था की तरफ किया जा सकता है।

सरकार के रोज़गार गारंटी कार्यक्रम और महिलाओं के समय का आवंटन

रोज़गार के नवीन अवसरों का सृजन करके महिलाओं के बिना भुगतान वाले कार्य के बोझ को कम किया जा सकता है और उनके जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है, तथा इस प्रकार भुगतान वाले और बिना भुगतान वाले श्रम के जेंडर विभाजन को परिवर्तित किया जा सकता है। कुछ मामलों में इससे आधारभूत संरचना में सार्वजनिक निवेश करने की प्राथमिकता को बल मिलेगा जिसके कारण बिना भुगतान वाले कार्य कम हो जाएँगे; जैसे – ग्रामीण जल परियोजनाएँ, सहायक पथ तथा लड़कों और लड़कियों के लिए विद्यालयों में अलग-अलग शौचालयों का निर्माण। इनके कारण पानी एकत्रित करने के लिए जाने में लगने वाला समय घट जाएगा और बच्चों को विद्यालय जाने में कम समय लगेगा तथा महिला विद्यार्थियों को विद्यालय जाने में अधिक सुविधा होगी। कुछ अन्य मामलों में ऐसे कार्यों व गतिविधियों में सीधे निवेश करने की आवश्यकता होगी जो 'अदृश्य' हैं; जैसे – बच्चों की देखभाल करना, वृद्धजनों की देखभाल करना तथा बहुत बीमार लोगों की देखरेख करना। जो सर्वाधिक आवश्यक हैं, उनकी सचमुच सहायता करने के लिए यह आवश्यक है कि कार्यक्रम सन्दर्भ-विशिष्ट हों। इसकी गारंटी को सुनिश्चित करने का सर्वोत्तम तरीका यह है कि प्रक्रियाएँ सहभागितापरक और समुदाय-आधारित हों जिनमें महिलाओं और महिला-समूहों की प्रत्यक्ष संलग्नता हो।

यदि इन योजनाओं को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक क्षेत्रों में नौकरियों की गारंटी देने वाले कार्यक्रम बनाए जाएँ तो इन कार्यक्रमों के तीन अलग-अलग लाभ होंगे। **पहला,** ये कार्यक्रम सहभागिता करने वाले लोगों के लिए आय का सृजन करेंगे, और इसके साथ ही सबके लिए मज़दूरी की एक दर का स्तर सुनिश्चित करेंगे जिसमें (कार्यक्रम के डिजाइन पर निर्भर करते हुए) कुछ लाभ भी शामिल होंगे। सम्भव है कि इन नवीन सृजित नौकरियों में हमेशा महिलाओं की भर्ती की जाए और यह भी सम्भव है कि हमेशा महिलाओं की ही भर्ती न की जाए। ऐसा हो सकता है कि महिलाएँ भवनों आदि के निर्माण में कार्यरत श्रमिक के रूप में नियोजित हों जबकि युवा पुरुष स्थायी रूप से बीमार लोगों की, घर-परिवार में रहकर, देखभाल करें। किन्तु इन सभी मामलों में, आय के अतिरिक्त, क्षमता-निर्माण और कौशल-अर्जन का लाभ अलग-अलग मात्रा या कोटि में हासिल हो सकेगा। **दूसरा,** प्रदान की जाने वाली वस्तुएँ और सेवाएँ अल्पसुविधायुक्त समुदायों और आबादी के लिए खपत का हिस्सा बन जाएँगी, जो कि अपने आप में ही निर्धनों के विकास के पक्ष में एक महत्वपूर्ण योगदान होगा। **तीसरा,** और यह जेंडर समानता को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत उल्लेखनीय है, कि इसके परिणामस्वरूप बिना भुगतान वाले कार्यों के पुनर्वितरण के सम्बन्ध में एक अत्याधिक शक्तिशाली नीति बन जाएगी।

हमारे सन्दर्भ में रोज़गार गारंटी कार्यक्रमों का महत्व यह है कि यदि इन्हें भलीभाँति एक प्रारूप दिया जाए तो ये कार्यक्रम बिना भुगतान वाले श्रम के मौजूदा जेंडर विभाजन को सुदृढ़ करने की बजाय महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए नौकरियों के सृजन के द्वारा पुनरुत्पादन की लागत को पुनर्वितरित करते हुए बिना भुगतान वाले कार्य को कम कर सकते हैं। अगर ऐसी परियोजनाएँ जेंडर-संसूचित नहीं होंगी तो खतरा यह होगा कि ये परियोजनाएँ महिलाओं के लिए प्रचलित दिन के 'दोहरे' प्रभाव (यानी काम के दोहरे बोझ) को उत्पन्न कर सकती हैं।

2.9 सारांश

महिलाओं और कार्य पर प्रारम्भिक विमर्शों को अर्थशास्त्र के ज्ञानानुशासन और इसकी सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि में खोजा जा सकता है, जहाँ मुख्यतः क्रेताओं और विक्रेताओं पर ध्यान दिया जाता था और बाज़ार को निर्मित करने वाले केवल उसी कार्य को ही उत्पादक माना जाता था जो लाभों को उत्पन्न कर सके।

जबकि घर-परिवार का क्षेत्र स्वयं को बिना भुगतान वाले कार्य की श्रेणी में रखता है, जो कि जीवन को चलाने के लिए आवश्यक है।

इस प्रकार, नारीवादी अर्थशास्त्रियों के लिए कार्य केवल गतिविधि या ऊर्जा का खर्च नहीं है जिससे, अन्य लोगों के लिए, मूल्य वाली वस्तुएँ और सेवाएँ उत्पादित होती हों बल्कि कार्य इस तरह भी निष्पादित किया जा सकता है जिसमें कोई मज़दूरी न मिलती हो, कोई वेतन या आय प्राप्त नहीं होती हो। आर्थिक रूप से कहें तो श्रम बाज़ार में कार्य वही है जो भुगतान के रूप में किया जाता है।

नारीवादी अर्थशास्त्र का विकास 'अर्थव्यवस्था' के प्रति मुख्यधारा के आर्थिक चिन्तन द्वारा प्रस्तावित प्रतिबन्धित और अनुपयुक्त दृष्टिकोण के प्रतिक्रियास्वरूप हुआ। वर्तमान नारीवादी आन्दोलन की सर्वाधिक व्यापक विषयवस्तुओं में से वह महत्व है जो महिलाओं के कार्यों को एक निर्धारक के रूप में पुनरुत्पादन की भूमिका पर, श्रम के जेंडर विभाजन पर तथा महिलाओं और पुरुषों के बीच के अधीनस्थ/वर्चस्वमूलक सम्बन्धों पर दिया जाता है।

2.10 इकाई के अंत में कुछ प्रश्न

1) क्या महिलाओं द्वारा किए गए उत्पादक और पुनरुत्पादक दोनों कार्यों को मापना महत्वपूर्ण है? उदाहरणों की सहायता से चर्चा कीजिए।

2) महिलाओं द्वारा किए गए कार्य के मापन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों की प्रासंगिकता की व्याख्या कीजिए।

3) महिलाओं के कार्य पर सार्वजनिक निवेश के निहितार्थों के लिए समय के उपयोग की सांख्यिकी का विश्लेषण कीजिए।

2.11 संदर्भ

Avila, Maria Betania (2007). Notas sobre o trabalho doméstico. In: Transformando as Relaçoes Trabalho e Cidadania: produçao, reproduçao e sexualidade. Núcleo de refl exão feminista sobre trabalho produtivo e reprodutivo. Bahía, Brazil as quoted *by Lilian Celiberti and Serrana Mesa, 2009 in Gender Relations in Productive and Reproductive Work IPS Latin America Edition.*

Beneria, Lourdes and Gita Sen (1981) Accumulation, Reproduction and "Women's Role in Economic Development": Boserup Revisited, Signs, Vol. 7, No. 2, Development and the Sexual Division of Labor (Winter)

Carrasco, Cristina (2001) La sostenibilidad de la vida humana, ¿un asunto de mujeres? IcariaEditorial- Barcelona as quoted *by Lilian Celiberti and Serrana Mesa, 2009 in Gender Relations in Productive and Reproductive Work IPS Latin America Edition*.

Celiberti, Lilian and Mesa, Serrana (2009) in Gender Relations in Productive and Reproductive Work IPS Latin America Edition.

Chakraborthy, Lekha (2008) Public Investment and Unpaid Work in India: Selectiive Evidence from Time Use Data.Conference Paper, Levy Economics Institute, NewYork. www.levyinstitute.org/pubs/wp-536.pdf

Ghosh, Jayati (2013) Women's Work in India in Early 21st centuary. www.sundarayya.org/papers/jayati/pdf Last accessed on January 9th, 2015.

Hirway, Indira (2005) Measurements based on Time Use Statistics, Conference Paper, Levy Economics Institute, NewYork.

Mies, M. (1981) Dynamics of Sexual Division of Labour and Capital Accumulation. Economic and Political Weekly.

Razvi. (2007) Political and Social Economy of Care in Development Context, Gender and Development Programme Paper. No. 3, UNRISD.

Rubin, Gayle (1998) "El tráfi co de mujeres: notas sobre la 'economía política' del sexo," in: Navarro, Marysa and Stimpson, Catherine (comp.). ¿Qué son los estudios de mujeres? Fondo de Cultura Económica. Mexico as quoted by *Lilian Celiberti and Serrana Mesa, 2009 in Gender Relations in Productive and Reproductive Work IPS Latin America Edition.*

Salvador, Soledad (2007) Estudio comparativo de la "economía del cuidado," in Argentina, Brasil, Chile, Colombia, México y Uruguay. IGTN/CIEDUR as quoted by *Lilian Celiberti and Serrana Mesa, 2009 in Gender Relations in Productive and Reproductive Work IPS Latin America Edition.*

United Nations Development Programme (1990) *Human Development Report 1990*. New York: Oxford University Press, page 32.

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Mies, M. (1981) Dynamics of Sexual Division of Labour and Capital Accumulation. Economic and Political Weekly.

Razvi. (2007) Political and Social Economy of Care in Development Context, Gender and Development Programme Paper. No. 3, UNRISD.